पाठ - 2
मनुष्य का गिरना

I पाठ-संबंधी विचार

1. उत्पत्ति 2:16-17- परमेश्वर ने मनुष्य को कुछ सरल से निर्देश दिए।
2. रोमियों 8:20-21- सृष्टि भी स्वतन्त्रता पाने की उम्मीद से अधीन की गई।
3. रोमियों 5:12-21- पाप और मृत्यु ने परमेश्वर के अनुग्रह का मार्ग खोला।
4. उत्पत्ति 3:21- परमेश्वर ने पापियों की शर्मिंदगी को ढांपने का प्रबन्ध किया।

II विषय-वस्तु:

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में रखा जहां उनके आराम के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई गईं। परमेश्वर ने वाटिका के मध्य जीवन का एक वृक्ष भी रखा, ताकि वे जीवन पाएं। उसने बाग में भलाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष भी रखा और उन्हें बताया कि वे उसमें से न खाएं, इसे खाने का दण्ड मृत्यु था। हव्वा ने शरीर की अभिलाषा, और आखों की चंचलता और जीवन के घमण्ड से भरमाई गई; उसने पाप किया और अपने पति को भी करने के लिए उकसाया। उनके पाप के कारण संसार में मृत्यु आई, और मनुष्य जाति परमेश्वर से और जीवन के वृक्ष से दूर हो गई। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य जाति के छुटकारे की योजना बनाई हुई थी।

1. परमेश्वर ने बाग़-ए-अदन में मनुष्य को अपनी पसन्द चुनने का अधिकार दिया:

क) उसने खुशहाल जीवन जीने के लिए उनकी हर आवश्यकता पूरी की- उत्पत्ति 2:9.

ख) उसने मनुष्य को ज्ञान के वृक्ष से खाने से मना किया- उत्पत्ति 2:16-17.

2. परमेश्वर ने आदम और हव्वा को छूट दी कि वे भरमाए जाएं:

क) धोखेबाज़ को अलग संदेश देने की अनुमति दी गई- उत्पत्ति 3:1-5.

ख) अपने मानवीय स्वभाव के कारण हव्वा भरमाई गई- उत्पत्ति 3:6; 1 यूहन्ना 2:15-17.

ग) हव्वा और आदम दोनों ने पाप करना पसंद किया- उत्पत्ति 3:6; याकूब 1:13-15.

3. पाप के कारण शर्मिन्दगी और मृत्यु हुई:

क) आदम और हव्वा को अपने पाप के कारण शर्म आने लगी- उत्पत्ति 3:7.

ख) अपने पाप के कारण वे परमेश्वर से छुपने लगे- उत्पत्ति 3:8-13; यशायाह 59:2.

ग) वे जीवन के वृक्ष से दूर हो गए- उत्पत्ति 3:22-24.

घ) परमेश्वर से जुदाई का अर्थ है मृत्यु- इफिसियों 2:1-12; प्रकाशितवाक्य 20:14-15; रोमियों 5:12.

4. आदमी को छुटकारा देने के लिए परमेश्वर के पास योजना थी:

क) उसने उन्हें कपड़े दिए ताकि वे अपने नंगेपन को ढक सकें- उत्पत्ति 3:21.

ख) उसने प्रतिज्ञा की कि स्त्री के वंश के द्वारा वह धोखा देने वाले के सिर को कुचल डालेगा- उत्पत्ति 3:15; रोमियों 16:20.

ग) एक आदमी के द्वारा उसने बहुतों को छुटकारा दिलवाना था- रोमियों 5:20-21.

III व्यावहारिक प्रासंगिकताएं

1. जीवन और मृत्यु में से एक का चुनाव करना मनुष्य का काम है- यहोशू 24:15; रोमियों 1:20-22.
2. परमेश्वर ने अपने पुत्रों को प्रकट करने की उम्मीद से जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास करना था, सृष्टि को विनाश के अधीन किया- रोमियों 8:18-30; मरकुस 16:15-16.
3. यीशु हर एक इन्सान के लिए मरा, इसलिए हर मनुष्य जीवन को चुन सकता है- यूहन्ना 3:16; रोमियों 1:16.
4. हर एक व्यक्ति ने पाप किया है, और इसलिए उसे पाप की सज़ा मौत मिलेगी- रोमियों 6:23.
5. वे सब जो यीशु पर भरोसा रखते हैं, अनन्त जीवन पाएंगे- रोमियों 6:16-18; इब्रानियों 5:9.

IV याद करने के लिए आयत: रोमियों 5:17-18,

''क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।''